शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसंबर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजस्थान के कलाकारों का सांगीतिक योगदान

संजय कुमार बारेठ (शोधार्थी)
डॉ. ओममनाथ व्यास (शोध निर्देशक)
एसोसिएट प्रोफेसर (संगीत विभाग)
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

राजस्थान के सुप्रसिद्ध कलाकारों का संगीत के क्षेत्र में बहुत योगदानरहा है। राजस्थान की संस्कृति और भारत की संगीत परंपरा को देश-विदेश में लोकप्रिय करने का श्रेय इन कलाकारों को जाता है। यहाँ के कलाकारों ने विदेशों में अपनी कला की छाप छोड़ी है। भारतीय संगीत परम्परा को जीवित रखने के साथ लोगों में संगीत सीखने की ललक पैदा की है। इस प्रकार राजस्थान के इन कलाकारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान के कलाकारों का संगीत के विकास में योगदान पर विचार किया गया है।

सारंगी वादक पं. रामनारायण

पं. रामनारायण का जन्म 25 दिसम्बर 1927 को उदयपुर में हुआ। इनके पिताजी उस समय उदयपुर के दरबारी संगीतज्ञ थे। जब पंडित जी 4 वर्ष के थे उन्हें एक छोटी सी सारंगी मिली जो कि एक घुम्मकड़ साधु भूल गया था। तबसे सारंगी की ओर आकर्षित हुए। सर्वप्रथम सारंगी वादन की शिक्षा अपने पिताजी नाथू जी से ली। अल्प आयु में ही इन्होंने उस समय के वयोवृद्ध संगीतज्ञ उत्साद, महमूद खाँ, पं. उदयलाल पं. माधव प्रसाद एवं उत्साद अब्दुल वालिद खाँ, जो अपने समय के सर्वोत्तम सारंगी-वादक थे, इनसे विधिवत शिक्षा लेना प्रारम्भ किया। कुछ समय पश्चात् ही सारंगी वादन में इतनी दक्षता प्राप्त कर ली कि आल इण्डिया रेड़ियो, लाहौर में इनकी सारंगी वादक में नियुक्ति हो गई। देश के विभाजन के तुरन्त बाद ये आकाशवाणी दिल्ली आ गये। इन्होंने भारत के उच्च कोटि के गायक पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, उत्साद फैयाज खाँ, गंगू बाई हंगल, उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ, केसर बाई, उस्ताद अमीर खाँ, के साथ सारंगी में संगत दी। भारतीय चित्रपट संगीत से भी इनका करीब 25 वर्ष का सम्बन्ध रहा।

इन्होंने अनेक बार विदेशी यात्रा की है। सन् 1954 में भारतीय सांस्कृतिक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में सर्वप्रथम चीन व मंगोलिया की यात्रा की। 1962 में सोवियत रूस की यात्रा की। सन् 1964 में इनके ज्येष्ठ भ्राता सुप्रसिद्ध तबला वादक पंड़ित चतुर लाल के साथ आस्ट्रेलिया, पश्चिम जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि की यात्रा की। पण्डित रामनारायण विदेशों में सारंगी को एक स्वतन्त्र रूप में प्रतिष्ठित करने में सफल हुए सन् 1963, 1969, 1971, 1972 में कई विदेशों की यात्राएं की तथा अपने सारंगी वादन के कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा अमेरिका, फ्रांस, स्विटजरलैण्ड की यात्रायें की जहाँ पर

इन्होंने विश्वविद्यालयों में सारंगी प्रशिक्षण का नियत कार्य सम्पूर्ण किया और कई नगरों में अपनी कला का प्रदर्शन किया। भारत सरकार ने 1991 में पण्डित रामनारायण को पद्मभूषण से सम्मानित किया।[1]

इसके बाद 2005 में इन्हें दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया। इन्होंने फिल्मी दुनिया में भी सारंगी वादन किया। फिल्म कश्मीर की कली, मुगल-ए-आजम, मधुमती, मिलन, इन फिल्मों में पं. रामनारायण जी ने सारंगी वादन किया।

शशि मोहन भट्ट

इनका जन्म 16 जनवरी, 1929 को जयपुर में हुआ। इनके पिता का नाम मनमोहन भट्ट था। बाल्यकाल से ही पारिवारिक वातावरण से संगीत की शिक्षा मिली। फिर 13 वर्ष की उम्र में ही सितार वादन की शिक्षा सैनी घराने के उस्ताद कायम हुसैन (जयपुर) से प्राप्त की। इनके बाद सुविख्यात सितार वादक पं. रविशंकर से शिक्षण प्राप्त किया तथा इन्हीं की शैली का उपयोग किया। सन् 1959 से आकाशवाणी से अपने कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दी। देश के आकाशवाणी केन्द्र दिल्ली, शिमला, जम्मू, जालंधर, बड़ौदा, गोवाहाटी, गोआ, जयपुर, आदि केन्द्रों से इनके कार्यक्रम प्रसारित होते रहे। राजस्थान विश्वविद्यालय के महारानी कालेज, जयपुर में सितार के प्राध्यापक रहे। इन्होंने कई शिष्य तैयार किये। अपने लघु भ्राता, बहिन तथा पुत्रों में विश्व मोहन भट्ट, मंजू भट्ट, कृष्ण मोहन भट्ट कुछ प्रमुख शिष्यों के नाम आदि। इनको संगीत नाटक अकादमी तथा कई संस्थाओं से सम्मानित किया गया। इस प्रकार शशि मोहन जी का सितार के क्षेत्र में अच्छा योगदान रहा है।[2]

मोहनलाल व्यास

इनका जन्म 28 नवम्बर 1902 ई. को उदयपुर में हुआ। इनके पिता पं काशीनाथ उदयपुर में गुरूकुल पद्धति से अपने घर पर शिक्षा देते थे। संगीत की सर्वप्रथम शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की तथा फिर लाहौर गए वहाँ पर 7 वर्ष तक पं. गिरधर शास्त्री से गुरूकुल प्रणाली से शिक्षा प्राप्त की। लाहौर में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अपने जन्म स्थान उदयपुर में लौट आए और महाराणा कॉलेज में संगीत व्याख्याता के पद पर इनकी नियुक्ति हुई। फिर मेयो कॉलेज, अजमेर में व्याख्याता बने तथा अजमेर से धर्मपुर गये वहाँ पर राजदरबार में राज्यशास्त्री पद पर दस वर्ष तक रहे। वहीं पर इन्होंने संगीत शास्त्र का अध्ययन किया। धरमपुर दरबार विजय देव सिंह और इन्होंने मिलकर संगीत भाव नामक विशाल ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ दो भागों में प्रकाशित है और इसका संगीत जगत में विशेष स्थान है तथा दरबार की सन् 1936 में मृत्यु हो जाने से व्यास जी मुम्बई चले गये। मुम्बई में साहित्य और संगीत सम्बन्धी कार्य पौद्दार हाई स्कूल और साहित्य सदन के माध्यम से करते रहे इन्होंने पृथ्वीराज रासो सम्बन्धी निबन्धों का सम्पादन एवं प्रकाशन किया।

इन्होंने पं. विष्णुनारायण भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति और संगीत शिक्षण में अनेक सुधार किये तथा भारतीय संगीत विषय पर अंग्रेजी में लेखन कार्य किया और पाश्चात्य पद्धति से स्वरलिपियाँ प्रकाशित की। इन्होंने हिन्दुस्तानी संगीत और ग्रीक तथा अरबी संगीत का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया। भारतीय संगीत को विदेशों में प्रतिष्ठित किया। श्रुतियों के विभागों के अन्तर-प्रमाण सम्बन्धी समस्याओं का समाधान संगीतज्ञों के सामने प्रस्तुत किया। इस प्रकार

मोहन लाल व्यास जी का संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा।[3]

कृष्ण मोहन भट्ट

इनका जन्म 18 मई 1948 को जयपुर में हुआ। इनके पिता शशि मोहन भट्ट सितार वादक थे, संगीत के पारिवारिक वातावरण में बाल्यकाल में चार-पाँच वर्ष तक तबला वादन और जलतरंग सीखी तथा फिर उन्होंने सितार को ही अपना मूल वाद्ययन्त्र माना तथा सितार वादन में कुशलता प्राप्त की।

सन् 1966 में संगीत नाटक अकादमी तथा अखिल भारतीय आकाशवाणी प्रतियोगिताओं में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1971 में सुर सिंगार संसद, मुम्बई द्वारा सुरमणि की उपाधि से अलंकृत हुए। 1972 से 1974 तक इंग्लैण्ड तथा अमेरिका के कई शहरों तथा विश्वविद्यालयों में टोकियो, हांगकांग, रंगून आदि में अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। 1965 से ही विद्यार्थियों को वाद्य संगीत सिखाने में लगे। 1973 से तो अमेरिका में ही (केलिफोर्निया) वर्ष के आठ माह तक निवास करते हुए विदेशी छात्र-छात्राओं को सितार, तबला, सरोद, सन्तूर आदि वाद्यों का विधिवत् शिक्षण प्रदान कर रहे हैं तथा अपने कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय संगीत का ज्ञान अमेरिका, लन्दन, पेरिस, सेनफ्रांसिसको आदि में विदेशी छात्र-छात्राओं को कराकर भारतीय संगीत के प्रचार करने में लगे हुए हैं।[4]

उस्ताद सुल्तान खान

15 अप्रेल 1940 को राजस्थान के सीकर जिले में इनका जन्म हुआ। इनके पिता का नाम गुलाब खान था। सुल्तान खान ने सारंगी वादन का सर्वप्रथम ज्ञान अपने पिता से ही प्राप्त किया था। ग्यारह वर्ष की उम्र से ही स्टेज में प्रस्तुतियाँ देने लग गये। पिता के बाद इन्होंने इन्दौर घराने के शास्त्रीय गायक उस्ताद आमिर खान से शिक्षा ली। इन्हें देश में सारंगी को पुनर्जीवित करने का श्रेय दिया जाता है। इन्होंने 'पिया बसंती रे' तथा 'अलबेला सजन आयो रे' गीतों की अपनी आवाज दी। 2012 में पदम भूषण से सम्मानित किया गया तथा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, अमेरिकन एकेडमी ऑफ़ आर्टिस्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया। इन्होंने पण्डित रवि शंकर के साथ विदेशों में कार्यक्रम प्रस्तुत किए।[5]

मोइनुद्दीन खान

इनका जन्म जयपुर के संगीतकारों के पारम्परिक परिवार में हुआ। इनके पिता महबूब खान एक अच्छे संगीतकार थे। 7 वर्ष की उम्र से ही पिता से सारंगी सीखना प्रारम्भ कर दिया। तथा सारंगी के अच्छे कलाकार हो गये। इन्हें कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2014 में भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया। इन्होंने होलीवुड में भी काम किया है। इन्होंने भारत के अलावा कई देशों में अपनी प्रस्तुतियाँ दी है। वर्तमान में जयपुर कत्थक कला केन्द्र में सारंगी वादन के पद पर कार्यरत है। तथा कई शिष्यों को सारंगी वादन की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।[6]

पंडित विश्व मोहन भट्ट

इनका जन्म जयपुर में 27 जुलाई 1950 को हुआ। इनके पिता का नाम पं मनमोहन भट्ट था। सर्वप्रथम अपने बड़े भाई सितार-वादक शशिमोहन भट्ट से व बाद में पं. रविशंकर से शिक्षा प्राप्त की। तथा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत शैली के वादन की दृष्टि से गिटार वाद्य में पं. विश्वमोहन ने कुछ परिवर्तन किये उसमें तरबे लगाई तथा झाला के लिए चिकारी का प्रयोग किया। गिटार वाद्य में इन्होंने 14 नये तार

जोड़े। भारतीय शास्त्रीय संगीत और संगीतकारों की विश्व पटल पर विशिष्ट पहचान बनाने में इनका बहुत बड़ा योगदान है। इन्होंने मोहनवीणा का आविष्कार किया। तथा लगभग 80 देशों में कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दी। पं. विश्व मोहन भट्ट को पद्म भूषण, पद्म श्री तथा ग्रैमी अवार्ड, संगीत नाटक अकादमी, म्यूजिक साइंटिस्ट, राष्ट्रीय तानसेन सम्मान, तंत्री सम्राट, राजस्थान रत्न एवं दो बार ग्लोबल म्यूजिक अवार्ड के अलावा कई सम्मानों से नवाजा गया है। विदेशों में प्रस्तुतियाँ देकर भारतीय संगीत का प्रचार-प्रसार किया है।[7]

अल्लाह जिलाई बाई

इनका जन्म 1 फरवरी 1902 को राजस्थान के बीकानेर में हुआ था। मांड गायन शैली को निखारने के लिए इन्होंने महाराजा गंगासिंह के दरबार में हुसैन बक्श से गायन सीखा तथा मात्र 13 वर्ष की आयु में ही इन्होंने राज गायिका की पदवी प्राप्त कर ली थी। इनको कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। संगीत नाटक अकादमी, अदर ट्रेडिशनल फोक, ट्राइबल, म्यूजिक तथा डांस ए थिएटर आदि।

अल्लाह जिलाई बाई ने सबसे पहले राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध गीत केसरिया बालम को महाराजा गंगा सिंह के दरबार में गाया था। तथा पूरे देश के लिए आॅल इंडिया रेड़ियो के माध्यम से अपनी प्रस्तुतियाँ दी तथा संगीत के क्षेत्र में योगदान के लिए भारत सरकार ने 1982 में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान में से एक पद्म श्री से सम्मानित किया।[8]

गुलाबो सपेरा

इनका जन्म राजस्थान के अजमेर जिले के कोटड़ा गाँव में सपेरा समुदाय में हुआ। गुलाबो कई बालीवुड और हालीवुड फिल्मों में नृत्य का कार्य कर चुकी है। कुछ फिल्मों के नाम हैं जैसे बंटवारा, क्षत्रिय, अजूबा आदि। कला और संस्कृति के क्षेत्र में बेहतर काम करने और राजस्थान के कालबेलिया नृत्य को विदेशों में पहचान दिलाने के लिए गुलाबों को 2016 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। इन्होंने लगभग 170 देशों में कालबेलिया नृत्य की प्रस्तुतियाँ दी है तथा राजस्थान की कला और संस्कृति का विदेशों में प्रचार-प्रसार किया है।[9]

ध्रुवपदाचार्य पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग

विश्व के सबसे वरिष्ठ ध्रुवपद गायकों की अग्रिम पंक्ति में आपका नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। आपने 92 वर्षीय जीवन का सम्पूर्ण काल ध्रुवपद जैसी भारतीय पुरातन गायकी के संरक्षण और संवर्द्धन में समर्पित कर दिया। आपने पारिवारिक पुष्टिमार्गीय ध्रुवपद संकीर्तन परम्परा के संत गायक अपने बाबा पं. गोपाल जी एवं पिताश्री पं. गोकुलचन्द भट्ट की परम्परा के सुप्रतिनिधि होने के साथ ग्वालियर घराने के पं. राजा भैया पूछवाले एवं डागर घराने के पं. वरिष्ठ डागर बन्धु उस्ताद नसीर मोइनुद्दीन एवं नसीर अमीनुद्दीन खान डागर जी से ध्रुवपद ख्याल आदि शैलियों की तालीम को विश्व स्तर तक पहुँचाया तथा अनेक देशीविदेशी शिष्य तैयार किये। आपके 7 पुत्र-पुत्रियां, शोभा, उषा, निशा, मधु, पूनम, रवि, आरती उच्च शिक्षित होने के साथ सितार, वायलिन, ध्रुवपद, ख्याल सभी विधाओं के मंचीय कलाकार हैं एवं उच्च शिक्षण संस्थानों के उच्च पदों पर कार्यरत हैं।

पंडित जी ध्रुवपद परम्परा में अनेक नवाचारों के पुरोधा के रूप में बहुविख्यात है। आपने 500 से अधिक ध्रुवपद, ख्याल, तराना, चतुरंग, त्रिवट आदि शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय, रचनाओं को

शब्द-स्वर बद्ध कर तीन पुस्तकें 'रस मंजरी शतक' संगीत मंजरी, संगीत विमला मंजरी पुस्तकों के प्रकाशन के साथ विहान कम्पनी कलकत्ता एवं महर्षि गान्धर्व वेद दिल्ली व जयपुर से गायन के 3 एलबम रिलीज हुए। आप आकाशवाणी, दूरदर्शन के 50 के दशक से प्रतिष्ठित कलाकार हैं। आपको श्रीराम भारतीय कला केन्द्र, दिल्ली में कॉलर थिपैसाइंटिफिक कल्चर डिपार्टमेंट भारत सरकार के तहत उच्च प्रशिक्षण के उपरान्त लेफ्टिनेंट गवर्नर श्री ए.एन. झा द्वारा 1956 में संगीत बारिधि के बाद लगातार राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हुये जिनमें से प्रमुख पुरस्कारों के नाम हैं - वाराणसी महाराजा द्वारा राष्ट्रीय स्वाति तिरूनाल एवं 2018 में 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' पुरस्कार उदयपुर महाराणा द्वारा, डागर घराना द्वारा, राष्ट्रपति अब्दुल कलाम द्वारा सम्मानित, जयपुर महाराजा सवाई ईश्वर सिंह द्वारा, मध्यप्रदेश कला परिषद द्वारा 'श्रेष्ठ कला आचार्य', डागर बन्धु सोसायटी द्वारा 2019 में 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। पंडित जी ने रस मंजरी संगीतोपासना केन्द्र एवं इन्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट, दो संस्थाओं के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में ध्रुवपद-धमार के संरक्षण-संर्द्धन में अनवरत कार्य कर राजस्थान की ध्रुवपद परम्परा के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में सर्वोच्च पद प्राप्त किया।[10]

डॉ. मधु भट्ट तैलंग

आपका जन्म 28 मार्च 1961 को भट्ट संगीत परिवार में हुआ। आप राजस्थान की पहली महिला ध्रुवपद गायिका के रूप में जानी जाती हैं। आप दुनिया भर में ध्रुवपद और शास्त्रीय कलाकारों के बीच विशेष स्थान रखती है। 10 वर्ष की उम्र से ही अपने पिता एवं सुप्रसिद्ध ध्रुवपद गायक पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग से ध्रुवपद एवं ख्याल गायन की तालीम ली। आप अपनी रचना समकालीन रचनात्मक ध्रुवपद कला के लिए बहुत जानी जाती है सबसे पहले नए ग्रन्थों भाषाओं ओर रागों का निर्माण करने के लिए कुछ अनूठे, नवीन और समकालीन विषयों का इस्तेमाल किया जो ध्रुवपद में प्रयोग किए गए। उनके स्वयंवर ने ध्रुवपद रागमालाओं को मल्हार, कल्याण और भैरवी की प्रशंसा में बनाया। सम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकीकरण, वन्देमातरम में देश भक्ति और सारे जहाँ से अच्छा के लिए नारी शक्ति कन्या बचाओ और बेटी पढ़ाओ और राजस्थानी मांड़ जैसे आधुनिक सन्दर्भों का उपयोग करने वाले अन्य ध्रुवपद पदाओं को बहुत सराहा गया है।

आप 1982 में आल इण्डिया रेडियो प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक के साथ प्रथम स्थान पर रही हैं। वर्तमान में आप दूरदर्शन की ध्रुवपद कलाकार हैं। आप पिछले 35 वर्षों से लगभग सभी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रमों और कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए नियमित रूप से दौरा कर रही है। आपको उच्च शैक्षणिक कार्य के लिए जाना जाता है। आपने ध्रुवपद पत्रिकाओं के विषय पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय में चार संदर्भ पुस्तकें और सौ से अधिक संगीत लेख प्रकाशित किए। आपके मार्गदर्शन में 22 छात्रों को डाक्टरेट की उपाधि मिली है। जिनमें एक विदेशी और दो दिव्यांग छात्र शामिल हैं। वर्तमान में, आप राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के संगीत विभाग में डीन के रूप में कार्यरत हैं। आपने राष्ट्रीय छात्रवृत्ति फैलोशिप और कला और संस्कृति विभाग, अकादमियों और यू.जी.सी. द्वारा दिए गए कई परियोजनाओं के लिए कार्य

किया जो विषय और शोध के लिए विशेष है। आपको 50 से अधिक प्रतिष्ठित राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे कि राजस्थान सरकार द्वारा राज्यपाल और राजस्थान के मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित किया गया। गणतन्त्र दिवस 2017 में उदयपुर महाराणा द्वारा डागर घराना अवार्ड, विशेष स्वर्ण पदक और स्वाति तिरूनाल अवार्ड, वाराणसी महाराजा और जयपुर महाराजा द्वारा सम्मानित, महारानी किशोरी कँवर अवार्ड और उत्तर भारतीय संगीत अकादमी, न्यूयार्क और मैसाचुसेट्स यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. द्वारा एक्सीलेंसी अवार्ड और कई अन्य अवार्डों से आप सम्मानित हुईं।

आप इन्टरनेशनल ध्रुवपद धमार ट्रस्ट नामक संस्था के सचिव के रूप में कार्य कर रही हैं और ध्रुवपद प्रदर्शनी के लिए लगातार कार्य कर रही हैं। 'रसमंजरी' पहले से ही हर वर्ष कार्यशालाओं और 22 अखिल भारतीय ध्रुवपद समारोह से बाहर आयोजित की जाती हैं। वर्तमान में आप कई विद्यार्थियों को ध्रुवपद व ख्याल जैसी विद्याओं का प्रशिक्षण प्रदान कर रही हैं।11

डॉ. ओमनाथ व्यास

राजस्थान के भरतपुर जिले के गाँव हाड़ौली में 29 सितम्बर 1961 को किशोरी लाल व्यास एवं श्रीमती रेशम देवी के घर में आपका जन्म हुआ। बचपन से ही आप संगीत रस के आदि हो चुके थे। आपके परिवार में आध्यात्मिक वातावरण होने की वजह से तथा माँ द्वारा विभिन्न अवसरों पर गाये-जाने वाले गीत-भजनों से संगीत के संस्कार मिले। आपको बचपन में ट्रांजिस्टर पर बजने वाले संगीत कार्यक्रम अचम्भित करते थे तथा प्राथमिक विद्यालय में अध्ययन के दौरान संगीत की प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिससे आपको संगीत सीखने में ओर अधिक रुचि जागृत हुई।

पारिवारिक परिस्थितियों व पिता के जल्दी निधन के बाद रोजगार की आवश्यकता हेतु आपने बी.काॅम एवं एम.काॅम की पढ़ाई की। राजस्थान विश्वविद्यालयों में प्रशासनिक पद पर कार्य करते हुए आपने राजस्थान संगीत संस्थान से निपुण तथा राजस्थान विश्वविद्यालय संगीत विभाग से एम.ए. कंठ संगीत की स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। आपने शास्त्रीय संगीत की बारीकियां श्री शिव शंकर पाण्डे जी से सीखीं। तथा यू.जी.सी. की प्राध्यापक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रो. शारदा मिश्रा के निर्देशन में मुगलकाल में पनपा उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत विषय पर शोध कार्य में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

विभिन्न मंचों के माध्यम से शास्त्रीय व युगम संगीत के नियमित कलाकार हैं। दूरदर्शन पर भी आपकी प्रस्तुतियों का प्रसारण होता रहता है। सन् 1992 से राजस्थान विश्वविद्यालय संगीत विभाग में सह-प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। आपके विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में करीब पचास शोध-पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। संगीत विषय पर पाँच पुस्तकों का लेखन व प्रकाशन हो चुका है। संगीत शोध व अन्वेषण में गहरी रूचि के परिणामतः आपके निर्देशन में अनेकों छात्र-छात्राऐं शोध कार्य पूर्ण कर चुके हैं। वर्तमान में आप राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के संगीत विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं।[12]

निष्कर्ष

राजस्थान के सुप्रसिद्ध कलाकारों का संगीत के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान रहा है। तथा

राजस्थान की सांस्कृतिक व भारतीय संगीत का विदेशों में प्रचार-प्रसार करने में बहुत बड़ा योगदान है। कलाकारों ने विदेशों में अपनी कला की छाप छोड़ी है तथा भारत का कला के क्षेत्र में नाम किया है और भारत वर्ष में अपनी कला का कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया है। समय-समय पर अपनी प्रस्तुतियाँ देकर भारतीय संगीत की परम्परा को जीवित रखी है तथा लोगों में संगीत सीखने की जागरूकता पैदा की है। इस प्रकार राजस्थान के इन कलाकारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. राजस्थान संगीत और संगीतकार प्रताप सिंह चौधरी

2. वही।

3. वही।

4. वही।

5. सुल्तान खान - भारत कोश ज्ञान का हिन्दी महासागर, https://m.bharatdiscovery.org

6.उस्ताद मोइनुद्दीन खान

वीकिपीडिया, https://him.wikipedia.org>wiki

7.विश्वमोहन भट्ट

वीकिपीडिया, https://him.wikipedia.org

8. अल्लाह जिलाई बाई

वीकिपीडिया, https://him.wikipedia.org

9. https://www.bhaskar.com7news,

गुलाबो सपेरा- DainikBhaskar

10. व्यक्तिगत साक्षात्कार

11. व्यक्तिगत साक्षात्कार

12. व्यक्तिगत साक्षात्कार